

## उत्तर प्रदेश के वैज्ञानिकों ने एंजाइम से तैयार होने वाले कपड़ों की नई तकनीक खोजी चर्चा में क्यों?

16 नवंबर, 2022 को उत्तर प्रदेश वस्त्र प्रौद्योगिकी संस्थान वभाग के नदिशक डॉ. जी नलन कलिली ने बताया कविभाग के वैज्ञानिक प्रो. एके पात्रा ने मनपसंद रंग और डिज़ाइन के कपड़े रसायान की बजाय एंजाइम से तैयार करने की एक नई तकनीक खोजी है। लैब में इसका सफल प्रयोग भी हो चुका है।

### प्रमुख बंदि

- प्रो. पात्रा ने बताया कि एंजाइम की तकनीक से बने कपड़े मानव शरीर और पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाएंगे। इसमें पर्यावरण के मतिर इंजाइम को वभिनिन केमिकल के विकल्प के रूप में इस्तेमाल कया जाता है।
- उन्होंने बताया कि कपड़ा खराब होने या फटने पर फेंकने की स्थिति में यह एंजाइम मटिटी में मलिकर उसे उरवर बनाएगा। यह एंजाइम पानी या मानव शरीर को भी नुकसान नहीं पहुँचाएगा।
- वदिति है का कानपुर के वैज्ञानिक प्रो. पात्रा उत्तर प्रदेश वस्त्र प्रौद्योगिकी संस्थान में टेक्सटाइल केमिस्ट्री वभाग के वभिगाध्यक्ष हैं। इन्होंने 800 से अधिक ऐसे केमिकल सूचीबद्ध कये हैं, जो टेक्सटाइल इंडस्ट्री में प्रयोग कये जाते हैं और जो पर्यावरण के लये हानिकारक हैं। उनका यह रसिर्च पेपर इंग्लैंड के प्रतषिठति जर्नल में प्रकाशति कया गया है।
- वस्त्रों को रसायनों से बचाने की तकनीक खोजने समेत ऐसे कार्यों के लये प्रो. पात्रा को दुनया के सर्वोच्च टेक्सटाइल अवार्ड से सम्मानति कया जाएगा। यह अवार्ड उन्हें इंग्लैंड की 'द सोसायटी ऑफ डायर एंड कलरसि्ट'की ओर से दया जाएगा। प्रो. पात्रा चार्टर्ड कलरसि्ट अवार्ड पाने वाले देश के पहले वैज्ञानिक होंगे।
- उल्लेखनीय है का चार्टर्ड कलरसि्ट अवार्ड टेक्सटाइल में शोध व एकेडमिकि क्षेत्तर में उत्कृष्ट कार्य करने पर दया जाता है।